आदान श्रृंखला–6

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

हिमाचल सरकार

रोगनाशी दवाऐं

–निर्माण एवं उपयोग

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला-5 (हि.प्र.)

सिद्धान्त एवं तकनीक विकास

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर

संकलन एवं संपादन

डॉ० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित सिंह पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

*इस पुस्तिका में उद्धृत विषय-वस्तु पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती विधि के लिए आवश्यक एक घटक **रोगनाशी दवाऐं-निर्माण एवं उपयोग** का वर्णन श्री सुभाष पालेकर द्वारा अनुमोदित दिशा-निर्देश एवं सामग्री मात्रा के अनुसार दिया गया है। इस प्राकृतिक खेती विधि द्वारा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर खड़े किए गए कुछ उत्कृष्ट मॉडल के अनुभव के आधार पर कुछ अन्य सम्बधित बिन्दुओं का भी इसमें समावेश किया गया है। इस अतिरिक्त जानकारी से किसान-बागवान स्थानीय जलवायु के अनुसार **"रोगनाशी दवाऐं"** बनाकर इसका उपयोग कर सकेंगे।*

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला-5 (हि.प्र.)
दूरभाष: 0177 2832412
ई-मेल : spnf-hp@gov.in, वेबसाईट : spnfhp.nic.in

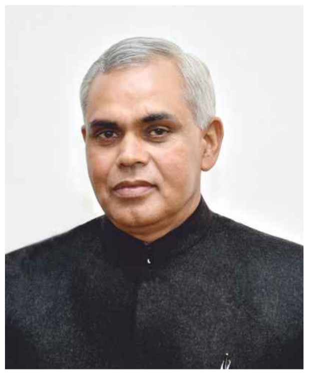

सत्यमेव जयते

राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश
राजभवन, शिमला–171001

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि किसानों–बागवानों की सुविधा के लिए प्राकृतिक कृषि के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न आदानों को बनाने की विधियों को सरल व व्यावहारिक तौर पर प्रस्तुत करने के लिए नियम संग्रह पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती हिमाचल प्रदेश में एक आंदोलन का रुप ले चुकी है। प्रदेश सरकार के सहयोग से इस प्राकृतिक खेती के प्रसार के लिए कृषि विभाग, प्रदेश के कृषि व बागवानी विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर एक प्रभावी कार्य योजना पर कार्य कर रहे हैं। प्राकृतिक कृषि के लिए गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने बड़े स्तर पर प्रशिक्षण कार्य आरम्भ किए हैं, जिसका परिणाम है कि अभी तक प्रदेश में लगभग 3000 किसानों ने इस पर पूर्ण रुप से कार्य आरम्भ कर दिया है। यह प्रसन्नता की बात है कि आज प्रदेश में हर बड़े कार्यक्रम, पारम्परिक मेलों, किसान मेलों व अन्य सरकारी कार्यक्रमों में प्राकृतिक खेती की तकनीक व उत्पाद प्रदर्शित हो रहे हैं।

कृषि क्षेत्र में देश और प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्राकृतिक खेती सबसे बेहतर विकल्प है। इस खेती पद्धति को अपनाने से किसानों के उत्पादन की लागत कम होकर आय कई गुणा बढ़ेगी। यह नितांत जरुरी है कि 'जहरमुक्त व पोषणयुक्त खाद्यान' के लिए व्यापक स्तर पर प्राकृतिक खेती को ही अपनाया जाए। हम सबकी यह कोशिश रहनी चाहिए की हर किसान–बागवान बंधु इससे जुड़ें और इस बारे में जागरुकता फैले ताकि अधिक से अधिक किसान इस पद्धति को अपनाएं।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तकें, जो किसानों के साथ सरल संवाद के रुप में तैयार की गई हैं और जिसमें प्राकृतिक कृषि से सम्बंधित विभिन्न सामग्री जैसे घनजीवामृत, बीजामृत, जीवामृत इत्यादि कैसे तैयार की जा सकती है, के बारे में दी गई जानकारी लाभदायक सिद्ध होगी। यह पुस्तकें सभी किसानों–बागवानों को इस दिशा में प्रेरित करेंगी।

इन पुस्तकों के सफल प्रकाशन के लिए लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

–आचार्य देवव्रत

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171002

संदेश

परम्परागत खेती बनाम रासायनिक खेती के गुण–दोषों पर एक सार्थक बहस आज देश–प्रदेश में गम्भीरता से हो रही है। कृषि आज भी हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तथा प्राचीनकाल से ही खेती करना उत्तम व्यवसाय माना जाता रहा है। शायद इसलिए कि इसमें किसान की आत्मनिर्भरता के साथ–साथ स्वायत्ता भी है। यह मानव उपयोग के लिए पौधों और जानवरों के विकास का प्रबंधन करने की एक कला है। 1960 के दशक के बाद देश में आई हरित क्रांति ने भारतीय कृषि के भविष्य की दिशा को तय किया। इस वैज्ञानिक खेती से खेत में मंहगे बीज, खाद, कीटनाशक तथा बड़े–बड़े औजारों का प्रयोग हुआ। इससे खेती मंहगी होती गई। पहले उपज बढ़ी, फिर स्थिर हुई तत्पश्चात्–घटना प्रारम्भ हो गई। कृषि ऋण इसी कृषि पद्धति की उत्पत्ति है।

माननीय प्रधानमंत्री जी का 2022 तक किसान की आय दोगुनी करने का लक्ष्य हम सबके सामने है। हिमाचल प्रदेश के किसान की खेती लागत कम हो, हमारा पर्यावरण स्वच्छ तथा किसान की आय दोगुनी हो, इस हेतू सरकार ने अपनी पहली बजट घोषणा में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारम्भ करके, 25 करोड़ का बजट में प्रावधान रखा ताकि क्रमबद्ध तरीके तथा लक्ष्य से प्रदेश का किसान 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' को अपनाए। इस हेतू 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कृषि विभाग के साथ पूरी तन्मयता से मेहनत कर रही है। हमारी सरकार इस योजना की लगातार निगरानी कर रही है।

पालेकर जी द्वारा सुझाए गए आदानों को तैयार करने के लिए बनाई गई यह छोटी–छोटी पुस्तिकाएं आसान भाषा में किसानों के लिए घर–द्वार पर ही मार्गदर्शिका की भूमिका अदा करेंगी। मैं लेखकों के इस प्रयास की सराहना करता हूँ।

–जयराम ठाकुर

कृषि, जनजातीय विकास
एवं सूचना–प्रौद्योगिकी मन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171002

संदेश

खेती में विभिन्न रासायनों का प्रयोग, फसल उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने हेतू प्रारम्भ हुआ था। फसल उत्पादन के समय विपरीत मौसम, भूमि की पौष्टिक तत्वों के लिए अधिक मांग व कीट–बीमारियों की रोकथाम कर अधिक उत्पादन लेना इस कृषि पद्धति का मूल उद्देश्य था। लेकिन धीरे–धीरे फसल उत्पादन का गिरना, पानी का प्रदूषण, भूमि का अम्लीकरण, भूमि में उपलब्ध खनिजों में कमी, कीट–बीमारियों में आ रही लगातार प्रतिरोधक क्षमता, नए कीट–बीमारियों का उद्भव इत्यादि इसके नकारात्मक परिणाम अब सामने आ रहे हैं। कीटनाशकों के प्रयोग से इसका उदिष्ट लाभ अल्पकालिक है, वहीं इनका दुष्प्रभाव वातावरण, जमीन एवं जल निकायों में लंबे समय तक रहना शुरू हुआ। आज कहावत है कि 'थोड़ा अच्छा है पर थोड़ा अधिक और अच्छा है' के अनुसार खाद–कीटनाशकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग मानव एवं अन्य उपलब्ध जीवन के नाश का कारण बनता जा रहा है।

प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के अंर्तगत सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर प्रदेश को जहरमुक्त बनाने की एक पहल की है। प्राकृतिक खेती की इस विधि को प्रदेश में लागू करने हेतू माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'शीर्ष समिति' का गठन हुआ है तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वियन इकाई' प्रदेश में इस कार्य को पूरी लगन के साथ कर रही है। समयबद्ध तरीके से 2022 तक प्रदेश के 9.61 लाख किसान परिवारों को इस प्राकृतिक खेती की ओर प्रेरित करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुझे विश्वास है कि प्रदेश की टीम जिला के आत्मा परियोजना के अधिकारियों के सहयोग से अपने लक्ष्य को क्रमबद्ध तरीके से पूरा करने में सफल होगी। प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले विभिन्न घटकों को बनाने एवं प्रयोग की विधियों को सरल भाषा में उतारा गया है ताकि किसान–बागवान आसानी से समझ सकें। निश्चित रूप से इस परियोजना की सफलता के लिए यह एक गम्भीर प्रयास है।

–डॉ० रामलाल मारकण्डा

प्रधान सचिव
कृषि एवं जनजातीय विकास
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171002

संदेश

पदम्श्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती, भूमि की उर्वरता एवं जैविक मात्रा में वृद्धि कर तथा फसलों एवं फल–सब्जियों में कीट–पतंगों एवं बीमारियों की रोकथाम करके किसानों की आर्थिकी में बदलाव लाने की क्षमता रखती है। हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में लोगों के पास कम भूमि है तथा किसान अधिकतर देसी नस्ल के पशुओं का पालन करते हैं। हमारा प्रदेश, कृषि बागवानी में देश के अग्रणी राज्यों में से एक है, लेकिन प्रदेश में बढ़ते रासायनों के प्रयोग से खेती लागत का लगातार बढ़ना चिंता का विषय है।

प्रदेश सरकार ने किसानों की खेती लागत घटाने,जहरमुक्त फसल उगाने तथा आय को दोगुना करने हेतु 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' नामक योजना का शुभारम्भ किया है। सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती पद्धति, खेती लागत को कम कर तथा भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखकर पहले ही वर्ष अधिक उत्पादन देने वाली विधि है। इस योजना के प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतू गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग की आत्मा परियोजना के अधिकारियों के साथ से इस खेती विधि को किसानों तक ले जाया जा रहा है। किसानों के लिए प्रशिक्षण शिविर, प्रदेश के बाहर भ्रमण तथा छोटी–छोटी गोष्ठियों के माध्यम से आज लगभग 2669 उत्कृष्ठ मॉडल प्रदेश में खड़े हो चुके हैं। लेकिन रासायनिक खेती को छोड़कर प्राकृतिक खेती विधि अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करना अभी तक एक चुनौती है, क्योंकि वह वर्षों से खेती–बागवानी में रासायनों का प्रयोग कर रहे हैं।

ऐसी आदान मार्गदर्शिकाओं द्वारा किसान को अपने घर में ही हर समय प्राकृतिक खेती में आवश्यक सामग्रियों के निर्माण की जानकारी सरल भाषा में मिलती रहेगी। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' का यह प्रयास इस दिशा में सराहनीय है।

–ओंकार शर्मा, भा०प्र०से०

प्रस्तावना

रासायनिक कृषि–बागवानी के दुष्प्रभाव दुनिया भर में देखे जा रहे हैं। इन रासायनों के अत्यधिक प्रयोग से जल–ज़मीन तो दूषित हुई ही है, विभिन्न वैज्ञानिक शोध, फल–सब्जियों द्वारा मनुष्य शरीर में रसायनों के प्रवेश और उनके स्वास्थ्य पर बुरे असर की भी पुष्टि करते हैं।

पर्यावरण को दूषित करने के अतिरिक्त रासायनिक खेती ने फ़सल उत्पादन की लागत को इतना बढ़ा दिया है कि, किसान या तो ऋण के बोझ में दब रहा है या कृषि छोड़ दूसरे रोजगार की तलाश में शहर की ओर रुख कर रहा है। रासायनिक खेती के लिए प्रस्तुत विकल्प, जैविक खेती भी एक मंहगा विकल्प है।

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित एवं प्रचारित 'प्राकृतिक खेती' इन कृषि समस्याओं हेतू एक सफल विकल्प बनकर उभरी है। श्री पालेकर जी के मार्गदर्शन में देशभर में लगभग 50 लाख किसान 'प्राकृतिक खेती' कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने इस विषय को लेकर किसानों को जागरूक करने के लिए पिछले 3 वर्षों से एक व्यापक अभियान छेड़ रखा है। गत् वर्ष हिमाचल प्रदेश सरकार ने 25 करोड़ के बजट के साथ 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारंभ कर 'प्राकृतिक खेती' को द्रुत गति प्रदान कर दी। प्रदेश में लगभग 17,800 किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूक किया जा चुका है। 1563 प्रशिक्षित किसानों के साथ विभिन्न फसलों पर 2669 मॉडल, प्रदेश के सभी जिलों में स्थापित हो चुके हैं।

इस खेती विधि में ज़हरमुक्त एवं अधिकतम फ़सल–फल उत्पादन हेतु कुछ विशेष घटक बनाने की विधियां श्री सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित की गई हैं। यह आसान एवं बहुत कम खर्चे में बनने वाले घटक हैं, जिन्हें हमारे आत्मा परियोजना के अधिकारी एवं प्रशिक्षित किसान सबको सीखा रहे हैं। इस परियोजना की 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई', शिमला द्वारा चित्र एवं वार्तालाप आधारित व्यावहारिक पुस्तिकाएं बनाई जा रही हैं, ताकि हर–एक घटक बनाने की विधि किसानों के पास आसानी से उपलब्ध हो।

आशा है यह व्यावहारिक पुस्तिकाएं, किसान–बागवानों के लिए घर में हर–समय उपस्थित मार्गदर्शिका की भूमिका अदा कर इस 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान को और गति प्रदान करेंगी।

–राकेश कंवर, भा०प्र०से०

निदेशक, ग्रामीण विकास विभाग
एवं राज्य परियोजना निदेशक
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (हि.प्र.)

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती – संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर–रोग–कीट–प्राकृतिक संकट–कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ–साथ किसान–बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही–सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाऐगा। इन सभी क्रियाओं को 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतू बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. जीवामृत किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव–जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. बीजामृत देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध–जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. आच्छादन भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतू इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढ़क दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. वापसा (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा–तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. सह–फसल मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेती के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़–पौधों के लिए किसी भी बाहरी रासायनिक खादों की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट–पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकुल वातावरण का निर्माण कर फसलों को कीट–पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता को भी समाप्त कर देती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय–समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा–हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भरतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300–500 गुणा अधिक है। अतः इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाऐ जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतू एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वियन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आत्मा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 80 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 3226 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

–डॉ॰ राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (हि.प्र.)

रोगनाशी दवाऐं

निर्माण एवं उपयोग

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को बड़ी तेजी से किसान–बागवान अपने खेत–बागीचों में अपनाने की ओर अग्रसर हैं। इस विधि से मिल रही सफलता से उत्साहित होकर वह इसका प्रचार–प्रसार भी अपने आस–पास के किसानों में कर रहा है। लेकिन ऐसे किसान–बागवान जो बड़े स्तर पर खेती–बागवानी कर रहे है, वह अभी भी फसलों तथा फल–पेड़ों पर आने वाली बीमारियों के प्रकोप की रोकथाम हेतू संशय में है कि क्या यह प्राकृतिक खेती विधि विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए सक्षम है या नहीं ?

इस प्राकृतिक खेती विधि में विभिन्न बीमारियों की रोकथाम हेतू भी सशक्त उपाय दिये हैं। जिनका नाम है **रोगनाशी दवाऐं**। यह दवाऐं किसी भी स्तर की खेती–बागवानी में फल–सब्जियों तथा फसलों में सभी तरह के रोगों की रोकथाम प्रभावी रूप से करती हैं।

गोमती: बहन निशा! मैं जहां भी जा रही हूँ वहां केवल 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' की ही बात हो रही है। अभी हाल ही की बात ले लो 4–5 दिन पहले मैं जनमंच

कार्यक्रम में गई थी। वहां पर भी इसी 'प्राकृतिक खेती' की तकनीक को बताने के लिए प्रदर्शनी लगाई गई थी। इतना ही नहीं जो माननीय मुख्य अतिथी जनमंच में आए थे, वो भी इस खेती विधि को किसानों की आय के लिए बेहतर बता रहे थे। और तो और अखबारों में भी इसी के चर्चे हैं।

निशाः अच्छा, ये सब तुम अब सुन रही हो! ये तो 2–3 सालों से माननीय राज्यपाल विभिन्न मंचों में कह ही रहे हैं।

गोमतीः हाँ ये तो है मा० राज्यपाल जी को कहते तो मैनें भी सुना है। लेकिन मुझे ये पता नहीं था कि इतने व्यापक स्तर पर किसान–बागवानों ने इसे अपनाना शुरू कर दिया है।

निशाः गोमती भाभी! कुछ और भी तो बताओ, जनमंच में तूने और क्या–क्या देखा?

गोमतीः जनमंच में मैनें घनजीवामृत और जीवामृत को भी प्रदर्शनी में रखे हुए देखा। लेकिन इनको बनाने का तरीका और प्रयोग तो हमें पहले ही पड़ोस के गांव

वाले जीवन भाई ने हमारे गांव में आकर बताया था। और इसे तो मैं अपने घर की क्यारी में भी प्रयोग कर रही हूँ। लेकिन अपनी मुख्य फसलों तथा सब्जियों की खेती में इस विधि को नहीं अपना रही हूँ।

निशाः अरे ऐसा क्यों? जब तुम अपनी क्यारी में इसे कर ही रही हो तो मुख्य फसलों तथा सब्जियों में करने से क्यों हिचकिचा रही हो? कहीं मन में कोई और डर तो नहीं बसा है?

गोमतीः तुमने, सच में मेरी डर वाली कमजोर नब्ज को पकड़ लिया। निशा तू ही बता! हर साल मैं अपनी मक्की, गेहूँ तथा थोड़े से धान से घर की जरूरत पूरी करती हूँ तथा शिमला मिर्च, टमाटर तथा गोभी इत्यादि, नगदी फसलें लगाकर पूरा साल का घर का तथा बच्चों की फीस–किताबों का खर्चा निकाल रही हूँ। इन नकदी फसलों पर तरह–तरह की बीमारियां जैसे पौध का लकवा, सफेद चुर्ण, झुलसा रोग, जड़ सड़न इत्यादि आती हैं। हर साल 4–6 हजार तक प्रति बीघा खर्च करके महंगे फफूंदनाशक खरीदकर इन फसलों को बीमारियों से बचाती हूँ। बस यही डर परेशान कर रहा है कि ये प्राकृतिक खेती क्या इन खतरनाक बीमारियों का उपचार कर पाऐंगी।

निशाः सुभाष पालेकर जी द्वारा दी गई यह विधि फसलों तथा फल–पौधों की हर बीमारी का उपचार पूरी तरह करने में सक्षम है। इसलिए तो हमारे प्रदेश में छोटे–बड़े कई किसानों ने इस खेती को करना शुरू कर दिया है। फिर तुम्हें डर किस बात का?

गोमतीः निशा दीदी, तुम्हें एक और बात बताऊँ। जनमंच कार्यक्रम खत्म होने के बाद मैं यह सोचकर वापस आ गई कि जैसे लोग अलग–अलग नाम से नई–नई दुकानें शुरू करते रहते हैं, वैसे ही प्राकृतिक खेती के नाम से रोगनाशी दवाओं की यह भी कोई नई दुकान शुरू हो गई है।

निशाः जब तुमने ऐसा सोच लिया कि नए नाम से नई दुकान खुल गई है तो क्यों इसके बारे में अभी भी उत्सुक लग रही हो?

गोमतीः इस उत्सुकता का कारण बताती हूँ। तुम भी जानती हो कि घरों में अक्सर हम खट्टी लस्सी को फैंक देते हैं। लेकिन उस खट्टी लस्सी को भी जनमंच में लगे प्राकृतिक खेती के स्टॉल में **फफूंदनाशक दवा** के रूप में रखा गया था। मैनें ऐसा कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा वक्त आएगा जिसमें खट्टी लस्सी भी फफूंदनाशक बन जाएगी। अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है। ऐसे ही कुछ और आदान भी वहां रख थे। जिन्हें आसान तरीके से बनाई हुई रोगनाशी दवाऐं बताकर लोगों को समझाया जा रहा था।

निशाः तुमने बिल्कुल ठीक देखा और बिल्कुल सही सुना। यह खट्टी लस्सी एक अति उत्तम फफूंदनाशक दवा है। मैं तो इसे लगातार अपने खेतों में प्रयोग करती हूँ। खट्टी लस्सी की तरह कुछ और भी ऐसी ही रोगनाशी दवाऐं हैं जो बनाने में आसान तथा बीमारियों के विरूद्ध बहुत ही प्रभावशाली हैं। इन्हें भी बनाने में कोई खर्चा नहीं आता।

गोमतीः तुम्हारे पास तो एक ही गाय है और वह भी पहाड़ी नस्ल की छोटी, फिर इतनी लस्सी कहां से लाती हो?

निशाः भाभी अब सूनो और साथ में लिखो भी। क्योंकि तुम अब इसे समझने के ठीक रास्ते पर आ गई हो। अब मैं तुम्हें बारी-बारी से इन रोगनाशी दवाओं को बनाना सिखाती हूँ।

रोगनाशी दवा नं०1ः खट्टी लस्सी (छाछ का घोल)

देसी गाय के दूध से घर में तैयार की गई लस्सी (छाछ) को खट्टी करने के लिए धूप में रखें। गर्मियों तथा सामान्य तापमान में यह 4-6 दिन जबकि सर्दियों तथा कम तापमान में इसे तैयार होने में 10 दिन तक लग सकते हैं।

जैसे ही तरल लस्सी (छाछ) के उपर झाग आना शुरू हो जाए तो समझो यह प्रयोग करने लायक हो गई है।

✵ **तैयार होने के बाद इसे तुरन्त प्रयोग करें।**

निर्माण विधि

एक 100 ली॰ के ड्रम में 3 ली॰ खट्टी लस्सी (छाछ) डालकर इसे पानी से भर दें ताकि कुल घोल 100 ली॰ बन जाए। इसे 2–3 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में घोलें। इस तरह खट्टी लस्सी आधारित फफूंदनाशक दवा तैयार हो गई।

लाभः यह फफूंदनाशक, जंतु नाशक तथा विषाणु नाशक है। इस घोल में पौध संजीवक के साथ–साथ प्रतिपिंड (Anti bodies) भी तैयार होते हैं जिससे पौधों में प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण होता हैं। यह रोगनाशी दवा, रोग जनक वैक्टीरिया को मारने का काम भी करती है।

रोगनाशी दवा नं॰ 2ः जीवामृत

गोमती भाभी जैसे तुमने कहा कि जीवन भाई ने तुम्हें जीवामृत बनाना तो सिखा ही दिया है। लेकिन क्या तुम्हें पता है यह भी एक बहुत ही अच्छे फफूंदनाशक के तौर पर काम करता है। इसका घोल इस तरह बनाएंः

निर्माण विधि

एक 100 ली॰ के ड्रम में 10 ली॰ जीवामृत डालकर इसे पानी से भर दें ताकि कुल घोल 100 ली॰ बन जाए। इसे 2–3 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में घोलें। इस तरह यह जीवामृत आधारित रोगनाशी दवा प्रयोग के लिए तैयार हो गई। इस घोल में रोग प्रतिकारक का निर्माण भी होता है।

लाभः जीवामृत अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणुओं का सर्वोत्तम जामुन है। साथ ही सर्वोत्तम फफूंदनाशक दवा भी है। यह जंतु रोधक (Anti-bacterial), विषाणु नाशक (Anti viral) तथा सर्वोत्तम संजीवक (Growth hormone) भी है। यह रोगनाशी दवा वाष्पीकरण नियंत्रक (Anti transpiration) होने के साथ–साथ फसल तथा फल–पौधों के पत्तों का तला क्षेत्र (Leaf Index) बढ़ाने वाला भी है।

✻ **तैयार होने के बाद इसे तुरन्त प्रयोग करें।**

रोगनाशी दवा नं० 3ः जंगल में पड़ी सूखी कंडी

गाय जब चरने के लिए घासनियों या जंगल में जाती है तो वहां गोबर भी करती है। लगभग 5–7 दिन पुराने इस सूखे गोबर को इकठ्ठा कर इसमें से लगभग 3 कि०ग्रा० लेकिन फिर लकड़ी के डण्डे से कूटकर बारीक करें। पीसे हुए बारीक गोबर को एक पतले कपड़े में डालकर एक पोटली बनाऐं तथा पोटली के उपर एक रस्सी बाधें। रस्सी का दूसरा सीरा एक 3–4 फुट लकड़ी के डण्डे के मध्य में बाधें। एक ड्रम में लगभग 100 ली० पानी लें। अब पोटली की रस्सी से बंधे डण्डे को ड्रम के उपर ऐसे टिकाऐं ताकि पोटली ड्रम के बीच में पानी में डूब जाए। पोटली को पानी में 48 घंटे रखें। परन्तु ध्यान रखें कि इस ड्रम में वर्षा का पानी नहीं गिरना चाहिए। 48 घंटे या इससे थोड़ी देर बाद पानी का रंग ताम्र जैसा हो जाएगा। बाद में पोटली को पानी से

निकालकर अच्छी तरह से निचोड़ें, दोबारा डुबोएं और फिर निचोड़ें। इस तरह इस प्रक्रिया को 3 बार करें। ताकि पोटली का सारा अर्क ड्रम के पानी में आ जाए। बाद में लकड़ी से पानी को घोल दें।

✻ **तैयार होने के 48 घण्टे के अंदर छिड़काव करें।**

लाभः यह बहुत ही उत्तम रोगनाशी दवा है।

रोगनाशी दवा नं० 4: सौंठास्त्र

निर्माण विधि

एक बर्तन में 1 ली० पानी लेकर इसमें 100 ग्रा० सौंठ पाउडर डालें। इसे लकड़ी से घोलें ताकि सौंठ पाउडर पानी में अच्छी तरह से मिल जाए। इस बर्तन को ढ़क्कन लगाकर आग पर इतना उबालें कि यह घोल आधा रह जाए। इसके बाद पतीले को नीचे रखकर ठण्डा कर लें।

इसके बाद एक दूसरा बर्तन लेकर इसमें 1 ली० गाय का दूध डालें। दूध को धीमी आंच पर एक उबाली आने तक रखें। इसके बाद बर्तन को नीचे उतारकर ठण्डा कर लें। ठण्डा होने के बाद दूध के उपर की मलाई को हटाकर इससे एक चम्मच लें।

एक ड्रम में 100 ली० पानी लें। इसमें 1 चम्मच में लिए दूध को तथा सौंठ अर्क को डाल दें। इस घोल को लकड़ी से धीरे से घोलें ताकि घोल पूरी तरह से घुल जाए। इसके

बाद इस घोल वाले ड्रम को बोरी से ढ़क कर 2 घण्टे तक रखकर कपड़े से छानें। अब यह सौंठास्त्र प्रयोग करने के लिए तैयार है।

❋ **इसे 48 घण्टे के अंदर प्रयोग करें।**

रोगनाशी दवा नं० 5: रामबाण रोगनाशी दवा

एक ड्रम में 8 ली० जीवामृत लें। फिर इसमें 3 ली० खट्टी लस्सी (छाछ) मिला दें। अब इसे पानी से भर दें ताकि कुल घोल 100 ली० बन जाऐ। इस घोल को लकड़ी के डण्डे से अच्छी तरह से घोलें ताकि डाला गया मिश्रण पूरी तरह से घुल जाऐ। इस तैयार घोल को कपड़े से छान लें। अब यह रामबाण रोगनाशी दवा प्रयोग के लिए तैयार है।

❋ **इसे 48 घण्टे के अंदर प्रयोग करें।**

लाभ: यह रोगनाशी दवा सभी तरह की बीमारियों पर रामबाण दवा का काम करती है।

गोमती: अरे निशा! ये बनाना तो जीवामृत और घनजीवामृत बनाने से भी आसान है। मैं तो अभी तक बिना जानकारी के कारण मन में डर बनाए बैठी थी। अब मेरी समझ में सब कुछ आ गया और आने वाली फसल से ही सारी की सारी खेती 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि से ही करूंगी।

पर एक जरूरी बात तो पूछना भूल ही गई। इन रोगनाशी दवाओं का प्रयोग कब–कब और कैसे करना है?

निशा: गोमती भाभी! सभी फसलों पर कोई भी बीमारी आने के समय का एक सीधा सा सिद्धांत है– मार्च महिने के बाद जब भी गर्मी पड़ने लगती है तथा वातावरण में वर्षा के कारण नमी अधिक होती है तो समझो बीमारियों के प्रकोप का सबसे उपयुक्त समय आ गया। इसलिए इस समय तक हमारी रोगनाशक दवाईयां बनाने की तैयारी पूरी हो जानी चाहिए।

- अपने खेत–बागीचों में आम कार्य या साधारण निरीक्षण के दौरान जिस दिन इक्का–दुक्का पत्तों पर छोटा सा काला–पीला, लाल धब्बा, छोटा घेरा, पत्तों का जलना, मुर्झाना इत्यादि दिखाई दे तो समझ लें कि बीमारी का आक्रमण शुरू हो गया है। इसलिए तुरंत रोगनाशी दवा का छिड़काव करें। अगर धब्बा दिखाई नहीं देता है तो दवा के छिड़काव की आवश्यकता नहीं है।
- इन रोगनाशी दवाओं को बारी–बारी से उपलब्धता के आधार पर छिड़क सकते हैं।
- अपने खेतों की फसलों या आस–पड़ोस में हर साल उगाई जाने वाली विशेषकर सब्जियों की फसलों पर हर वर्ष आने वाली आम बीमारी तथा उसके प्रकोप के समय को आधार मानकर हम इस खेती विधि में रोगनाशी दवाओं का छिड़काव, बीमारी आने से पहले ही शुरू कर दें तथा 7–10 दिन के अंतराल पर लगभग दो मास तक करते रहें।

फल–पेड़ों (बागवानी) पर छिड़काव के लिए एक सामान्य सारणी

हर अमावस एवं पूर्णिमा को **कीटनाशी दवा** का छिड़काव करना है और हर अष्टमी(शुक्ल) के 8 दिन बाद किसी एक **फफूंदनाशी दवा** का छिड़काव करना है। इसके 1 सप्ताह (मध्य अष्टमी) के बाद भी छिड़काव करना चाहिए।

गोमती: मुझे ये रोगनाशी दवाऐं बनाना तो अब आ ही गया लेकिन मैनें अपने खेतों के किनारे कुछ फलदार पौधे भी लगाए हैं। पहले तो मैं इनकी सुप्त अवस्था के समय, इनके तनों पर फफूंदनाशक का पेस्ट लगाती थी। परन्तु ये फफूंदनाशक मंहगा था साथ ही इसे पेंट में मिलाकर लगाना पड़ता था। इससे कीमत और बढ़ जाती थी तथा

लगाते–लगाते सिर भी चकरा जाता था।

अब मुझे पूरा विश्वास है कि इस विधि में इसके लिए भी कोई न कोई पेस्ट जरूर सुझाया होगा, जो बिना रासायन के सस्ता तथा प्रभावी होगा। क्यों है न ऐसा निशा दीदी?

निशा: हां भाभी! अब लगता है कि सचमुच में तुम प्राकृतिक खेती वाली किसान बन गई। पालेकर जी ने पौधों के तनों में लगाने के लिए एक रासायन मुक्त और बिना खर्च वाला पेस्ट सुझाया है जिसका नाम है **पौध मलहम** या **पौध पेस्ट**। इसे बनाना भी मैं तुम्हें सीखाती हूँ।

निर्माण विधिः पौध पेस्ट बनाने के लिए हमें यह सामग्री चाहिएः

पानी	50 ली०
गोमूत्र	20 ली०
ताजा गोबर	20 कि०ग्रा०
दरेक या अन्य उपलब्ध पौधे के पत्तों की चटनी	10 कि०ग्रा०
हल्दी	200 ग्रा०
हींग पाउडर	10 ग्रा०
चिकनी मिट्टी **या** अलसी का तेल	2.5 कि०ग्रा० **या** 750 मि०ली० (1 बोतल)

एक बड़ा सा टब या ड्रम लें और इसमें 50 ली० पानी डालें। अब इसमें 20 ली० गोमूत्र और फिर 20 कि०ग्रा० गोबर डाल दें। इसके बाद अब इसमें दरेक या अन्य घर के आस-पास उपलब्ध किसी एक कड़वे पौधे के पत्तों की 10 कि०ग्रा० चटनी (सिल्ल बट्टे से पीसकर), 200 ग्रा० हल्दी और 10 ग्रा० (तीन उंगलियों वाली दो चुटकियां) हींग पाउडर (तीन उंगलियों वाली दो चुटकियां) क्रमशः डाल दें। अब इसे लकड़ी के डण्डे से घोलें ताकि सारे घटक आपस में अच्छे से मिल जाऐं। इस ड्रम या टब को जूट की बोरी से 48 घंटे के लिए ढ़क कर रख दें। 48 घण्टे के बाद पौध पेस्ट/पौध मलहम प्रयोग के लिए तैयार है।

गोमती: इस लेप का प्रयोग भी मुझे क्या पौधे की सुप्त अवस्था में ही करना है?

निशा: इस लेप के प्रयोग के लिए तुम्हें थोड़ी अधिक मेहनत करनी होगी। यदि इस रसायनमुक्त लेप का पूरा लाभ लेना है और पौधों को बीमारी मुक्त रखना है तो तुम्हें इसका प्रयोग साल में 4 बार करना पड़ेगा:

1. पहला लेपन- कृतिका नक्षत्र (मई मास के दूसरे से तीसरे सप्ताह में)
2. दूसरा लेपन - हस्त नक्षत्र (सितंबर के आखिरी और अक्टूबर के पहले सप्ताह में)
3. तीसरा लेपन - सूर्य का उतरायण प्रवेश काल (21 दिसंबर से 14 जनवरी तक)
4. चौथा लेपन - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (होली और वर्ष प्रतिपदा के बीच)

पौधों में बीमारी इत्यादि रोकने के लिए कुछ प्रमुख सुझाव

➢ जब पेड़-पौधों की जड़ों के पास पानी भरा हो, उस समय जमीन में हवा का अस्तित्व नहीं रहता। ऐसे समय में पौधे कमजोर बनते हैं, जिससे पौधे पर

विभिन्न किस्म के फफूंद, वायरस इत्यादि आते हैं। इससे पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

- मानसून समाप्ति के बाद सर्दियों में जब शाम को अकस्मात बादल आकर बारीश करते हैं तो दूसरे दिन सुबह जरूर कोहरा आता है जो फसल को नुकसान पहुंचाता है।
- इसलिए जिस दिन शाम को बारीश हो उसके दूसरे दिन सुबह खेत पर जाएं। जिस मेढ़ से हवा हमारे खेत में प्रवेश करती है उस मेढ़ के बीच में सूखा हुआ कचरा (पेड़ –पौधों का) जलाऐं। उसमें सुखे हुए उपले के टुकड़े डालें ताकि धुआं निकले। इसी समय दरेक के सूखे पत्ते लेकर आग में लगातार डालते रहें। इससे लगातार धुआं निकलता रहेगा जो हमारी सब्जी एवं फल–पेड़ों पर एक पतली परत बनाऐगा। इस प्रक्रिया से बीमारियां, जंतु इत्यादि नष्ट होते हैं, पत्तों के आस–पास का तापमान बढ़ता है और हमारी फसल पाले से होने वाले नुकसान से बचती है।
- फसल के अंदर पत्तों के पास की हवा में जब नमी बढ़ती है तो फफूंद का आक्रमण निश्चित होता है। इसको रोकने के लिए फल–पेड़ों की 2 कतारों के बीच काष्ट

आच्छादन बिछाने से सूखे घास–फूस का यह आच्छादन हवा से नमी खींच लेता है। जिसके कारण फफूंद से फसल की सुरक्षा होती है।

- जब बारीश का या सिंचाई का पानी खेत में भर जाता है तो मिट्टी के बीच के

कणों की जगह पानी से भर जाती है। जिससे वहां की हवा बाहर निकल जाने से जीवाणुओं को प्राण वायु (ऑक्सीजन) नहीं मिलती तथा जड़ें सड़ने लगती हैं। पत्तों की खाद्य आपूर्ति बंद होती है और पौधों की वृद्धि रूक जाती है तथा पत्ते पीले पड़कर गिरने लगते हैं।

➢ इन सब परिस्थितियों का कारण हमारे खेत में वाफ्सा का न होना है। खेत में 60% उपज केवल वाफ्सा न होने के कारण घटती है।

गोमती: निशा दीदी! सच में ही आज मेरी आँखें खुल गई। बस अब तक जो हुआ सो हुआ। अब तक गलत सलाह के चलते अनजाने में न जाने हमने कितना जहर इन खेतों एवं फल–सब्जियों में डाल कर न केवल अपने घर–परिवार के स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया बल्कि शहर में जहरयुक्त उत्पाद बेच कर न जाने कितना पाप अपने उपर चढ़ा लिया। आज और अभी से तुम मेरी गुरु और मैं तुम्हारी शिष्य। मेरे घर–खेत में अब न कोई फफूंदनाशक और न ही कोई रासायन। बस केवल प्राकृतिक खेती।

निशा: भाभी मुझे अब अपने गाँव में शिष्य नहीं साथी मिल गई। अब दोनों प्रण लेती हैं कि आने वाले वर्ष में गाँव में सभी को इस प्राकृतिक खेती हेतू जागरुक करेंगी।

प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों हेतू हिमाचल सरकार द्वारा दिए जा रहे उपदान

1. भारतीय नस्ल की गाय	₹ 25,000/ परिवार + ₹ 5000 यातायात खर्चा + ₹ 2000 मंडी फीस
2. गौशाला का फर्श तथा गोमूत्र एकत्र करने हेतू गड्ढ़ा	₹ 8,000/ परिवार
3. विभिन्न आदान बनाने एवं संग्रह हेतू ड्रम	₹ 2250/ परिवार
4. संसाधन भण्डार खोलने हेतू	₹ 10,000-50,000 तक /समूह या परिवार/पंचायत

अधिक जानकारी हेतू सम्पर्क करें

खण्ड स्तर पर: *खण्ड तकनीकी प्रबन्धन (BTM) एवं सहायक तकनीकी प्रबन्धन (ATM)*

जिला स्तर पर: *परियोजना निदेशक, आत्मा (कृषि विभाग)*

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर

देश–दुनिया को 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' पद्धति देने वाले कृषि वैज्ञानिक पदम्श्री श्री सुभाष पालेकर का जन्म महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के गांव बेलोरा में सन् 1949 में हुआ। नागपुर से अपनी कृषि स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद 1972 से अपने पिता के साथ अपनी जमीन पर रासायनिक खेती आरम्भ कर दी। प्रकृति द्वारा रचित फल–पौधों की उत्पत्ति एवं विकास तथा रासायनिक खेती का द्वन्द, पालेकर जी को इस रहस्यमयी सत्य को जानने के लिए लगातार प्रेरित कर रहा था। 1972 से 1985 के बीच की गई रासायनिक खेती में इन्होंने पाया कि प्रारम्भिक दौर में फसल–वृद्धि हुई, लेकिन धीरे–धीरे इसमें स्थिरता आने लगी और अन्तत्तोगत्व इसमें गिरावट आ गई।

रासायनिक खेती को पूरी तरह से वैज्ञानिक अनुमोदन के अनुसार करने पर भी उत्पादन का घटना, 'हरित क्रांति' के सत्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा था। यहीं से उन्होंने इस रासायनिक खेती के व्यवहारिक विकल्प की तलाश आरंभ कर दी। महाविद्यालय पढ़ाई के दौरान इन्होंने झारखंड–छतीसगढ़ के जनजाति क्षेत्र में जगंलों का अध्ययन कर यह पाया कि प्रकृति में 'स्वयं पोषी तथा स्वयं विकासी' व्यवस्था कायम है। इसलिए बाहर से किसी भी आदान की आवश्यकता नहीं है। तत्पश्चात 12 वर्षों के सघन अभ्यास एवं अनुसंधान के बाद उन्होंने एक विकल्प को सम्पूर्ण अनुमोदन के साथ देश के सम्मुख रखा। जिसका नाम है 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती'।

आप इस 'रसायन मुक्त तथा लागत रहित' खेती विकल्प को कार्यशाला, संगोष्ठी, स्वलिखित किताबों तथा देश में विभिन्न फसल–फलों पर खड़े किए गए उत्कृष्ट मॉडल के माध्यम से देश–विदेश में ले जा रहे हैं। आज देश भर में 50 लाख से अधिक किसान इस खेती को अपना चुके हैं। हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक प्रदेश में राज्य सरकारों ने इस प्राकृतिक खेती अभियान को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया है। इसके अतिरिक्त, अन्य प्रदेशों में भी यह एक विशाल सामाजिक आंदोलन का रूप ले चुका है। आपने अभी तक लगभग 154 अनुसंधान परियोजनाओं में काम करते हुए इस पद्धति पर 30 से अधिक पुस्तकें, देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित की हैं। भारतवर्ष के नीति आयोग ने अपने दृष्टि पत्र में इस खेती को किसान की आय दोगुनी करने के लिए एक सशक्त विकल्प माना है। भारत सरकार की ओर से उन्हें वर्ष 2016 का देश का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त पालेकर जी को कई राज्यों और नामी संस्थाओं की ओर से भी अन्य सम्मानों जैसे कर्नाटक सरकार का बसवाश्री पुरस्कार, भारत कृषक रत्न पुरस्कार और गोपाल गौरव पुरस्कार से नवाजा गया है।

हिमाचल प्रदेश, आपके मार्गदर्शन में इस खेती विधि को आगे बढ़ाने की दिशा में अग्रसर है।

मुद्रक – दत्ता ग्राफिक्स, सोलन (हि.प्र.)

चित्रांकन – दिनेश अत्री, शिमला (हि.प्र.) 98172–74532